श्रीगुरुगीता

श्लोक १६२

समुद्रे च यथा तोयं क्षीरे क्षीरं घृते घृतम् ।
भिन्ने कुम्भे यथाकाशस्तथात्मा परमात्मनि ॥

जैसे समुद्र में पानी, दूध में दूध, घी में घी
और घड़ा टूट जाने पर, बाह्याकाश में घटाकाश मिल जाता है,
वैसे परमात्मा में जीवात्मा मिल जाती है।[१]

© २०२४ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

---

[१] "स्वाध्याय सुधा" से रूपान्तरित अनुवाद [चित्शक्ति पब्लिकेशन्स, २०२३] पृ ६७।